इकाई 20 संवाद शैली

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 वाक्य तथा वार्तालाप की विशेषताएँ

- 20.2.1 वाक्य
- 20.2.2 वाक्य में पदक्रम
- 20.2.3 अनुतान
- 20.2.4 सम्प्रेषण का उद्देश्य
- 20.2.5 वाक्य से ऊपर का स्तर

20.3 वार्तालाप (मूल पाठ)

20.4 वार्तालाप पर चर्चा

20.5 सारांश

20.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

20.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

20.0 उद्देश्य

आधार पाठ्यक्रम की भाषा से संबंधित पिछली इकाइयों में अब तक आपने हिंदी भाषा की लिपि, ध्वनि एवं शब्द, मुहावरों आदि का ज्ञान प्राप्त किया है। इस इकाई का उद्देश्य आपको हिंदी भाषा में वार्तालाप या संवाद की प्रकृति से परिचित करवाना तथा संवाद लिखना सिखाना है। इस इकाई को पढ़ने एवं समझने के बाद आप :

- लिखित भाषा एवं मौखिक भाषा के अंतर को समझ सकेंगे;
- हिंदी भाषा में वाक्य की विशेषताएँ रेखांकित कर सकेंगे;
- हिंदी भाषा में वार्तालाप या संवाद लिख सकेंगे; और
- वार्तालाप या संवाद की विभिन्न विशेषताएँ बता सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई हिंदी भाषा से संबंधित आधार-पाठ्यक्रम के चौथे खंड की दूसरी इकाई है। इससे पूर्व के तीन खंडों की विभिन्न इकाइयों में अब तक आप ने हिंदी भाषा की व्याकरण संबंधी जानकारी प्राप्त की है। हमें उम्मीद है कि अब तक आप हिंदी भाषा की लिपि, ध्वनि, शब्द, मुहावरे आदि की प्रमुख विशेषताओं को पहचान चुके होंगे। इस इकाई में हम आप को मुख्य रूप से संवाद की विशेषताओं को समझा कर संवाद लिखना सिखाएंगे।

इतना तो आप जानते ही होंगे कि किसी भी भाषा का इस्तेमाल सामान्यतः दो रूपों में होता है— लिखित एवं मौखिक। भाषा का जन्म इसके मौखिक रूप में ही हुआ है। लिखित रूप में भाषा का व्यवस्थित रूप बहुत बाद की घटना है। यहाँ हमारा संबंध भाषा के मौखिक रूप से है। अर्थात् यहाँ हम बातचीत में प्रयुक्त भाषा की चर्चा करेंगे। आपस में की जाने वाली बातचीत को हम वार्तालाप या संवाद कहते हैं। वार्तालाप या संवाद उस भाषा से बहुत भिन्न

होता है, जो हम पुस्तकों में पढ़ते हैं। लिखित भाषा एक व्यवस्थित तथा व्याकरणिक भाषा होती है। उसका हर एक के लिए एक निश्चित अर्थ होता है, जो उस भाषा में निहित रहता है। किंतु वार्तालाप में ऐसा नहीं होता। वार्तालाप या संवाद की भाषा व्याकरण के नियमों से बँध कर नहीं चलती। वार्तालाप की भाषा बहुत सहज होती है। आप इस इकाई का अध्ययन करते हुए देखेंगे कि वार्तालाप में किस प्रकार टूटे हुए वाक्य आते हैं, अंग्रेजी शब्दों का खुल्लमखुल्ला प्रयोग किया जाता है (जिसे कोडमिक्सिंग कहा जाता है), भाषा में प्रांतीय भाषा के शब्द जुड़ जाते हैं तथा कैसे विभिन्न शब्दों पर बल दे कर अपनी बात कही जाती है। किसी भी भाषा में वार्तालाप करते हुए जब किसी दूसरी भाषा के शब्दों या वाक्यों का उस भाषा के वार्तालाप में इस्तेमाल होता है तो उसे कोडमिक्सिंग कहा जाता है।

20.2 वाक्य तथा वार्तालाप की विशेषताएँ

यह तो आप जान ही गए होंगे कि वार्तालाप या संवाद आपस में की जाने वाली बातचीत को कहते हैं और यह बातचीत वाक्यों में होती है। इसलिए सब से पहले हम भाषा में वाक्य क्या होता है तथा वार्तालाप में वाक्य का इस्तेमाल कैसे होता है - इसकी पड़ताल करें।

20.2.1 वाक्य

भाषा में वाक्य अर्थ की दृष्टि से एक पूर्ण इकाई होता है। अर्थात् एक वाक्य में आए हुए शब्द कुल मिलाकर एक निश्चित अर्थ प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए

'राम ने कल शाम को एक फिल्म देखी।'

इस वाक्य में किसी एक व्यक्ति के संदर्भ में उसके एक क्रिया-कलाप की पूरी सूचना है।

वाक्य शब्दों से बनता है और शब्दों के अपने अर्थ वाक्य को पूर्ण अर्थ प्रदान करते हैं। लेकिन वाक्य शब्दों का ढेर नहीं है। किन्हीं भी आठ-दस शब्दों को एक जगह रख देने से वाक्य नहीं बन जाता। जैसे ..... राम, खाना, पैसा, शाम, उधार, लेना, मांगना। इन आठ-दस शब्दों से कोई भी सुनिश्चित अर्थ ध्वनित नहीं होता। इस कारण यह आवश्यक है कि वाक्य में आने वाले शब्द किसी क्रम में एक दूसरे के साथ इस प्रकार जुड़ें, जिससे पूर्ण अर्थ प्रकट हो। वास्तव में शब्द और वाक्य के बीच एक और कड़ी है, जिसे वाक्यांश कहते हैं। शब्द वाक्यांश के रूप में ही वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। पूर्ण अर्थ प्रकट करने के लिए वाक्य में किसी कर्त्ता का होना अनिवार्य है और उसके क्रिया-व्यापार का उल्लेख आवश्यक है। यही वाक्यांश है, जिसे क्रमशः हम कर्त्ता और क्रिया वाक्यांश कहते हैं। एक वाक्य में कम-से-कम दो वाक्यांश जरूरी हैं और क्रिया व्यापार के संदर्भ में अन्य बहुत से अर्थों को प्रकट करने के लिए हम और वाक्यांश जोड़ सकते हैं। नीचे दिए गए आरेख में आप एक वाक्य के गठन को देख सकते हैं :

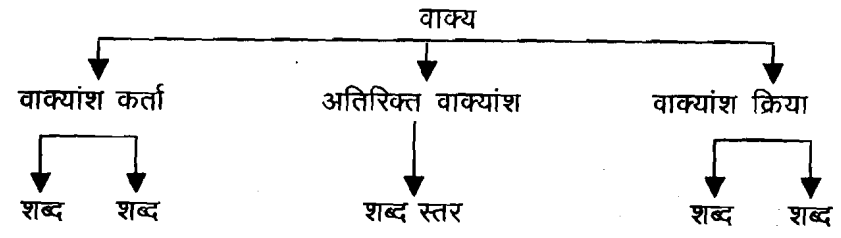

हमने ऊपर चर्चा की है कि एक वाक्य में दो से अधिक वाक्यांश हो सकते हैं। वाक्यांशों की संख्या अलग-अलग वाक्य प्रकारों के लिए अलग-अलग होती है। कुछ वाक्यों में दो वाक्यांश जरूरी हैं और कुछ वाक्यों में दो से अधिक। हम आगे हिंदी के कुछ प्रमुख वाक्य-प्रकारों का परिचय देंगे, जिनमें अनिवार्य वाक्यांशों का उल्लेख वाक्यांश के नीचे किया गया है।

1)	अकर्मक वाक्य	**लड़का**		**सोया**	
		कर्त्ता		क्रिया	
2)	सकर्मक वाक्य	**वह**	**खाना**	**खा रहा है**	
		कर्त्ता	कर्म	क्रिया	
3)	गंतव्य सूचक वाक्य	**वह**	**कालिज**	**गयी**	
		कर्त्ता	गंतव्य	क्रिया	
4)	द्विकर्मक वाक्य	**मैंने**	**उसको**	**पैसे**	**दिये**
		कर्त्ता	प्राप्तकर्ता	कर्म	क्रिया
5)	पूरक वाक्य	**मुझे**	**बुखार**	**है**	
		कर्त्ता	पूरक	क्रिया	
6)	कर्मपूरक वाक्य	**मैंने**	**राधा को**	**डाक्टर**	**बनाया**
		कर्त्ता	कर्म	कर्मपूरक	क्रिया

ये प्रमुख वाक्य प्रकार हैं। ऐसे कुछ अन्य वाक्य प्रकार भी हैं, जिन्हें आप व्याकरण ग्रंथों में देख सकते हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में उल्लिखित वाक्यांश इन वाक्यों के लिए अनिवार्य घटक हैं। आमतौर पर अन्य सूचनाओं के लिए कई ऐच्छिक वाक्यांशों का भी प्रयोग किया जाता है। आगे कुछ प्रमुख ऐच्छिक वाक्यांशों का उल्लेख किया गया है :

ऐच्छिक वाक्यांश

- स्थान वाचक — कमरे में, दीवार पर आदि
- समय वाचक — शाम को, ठीक सात बजे
- करण वाचक — चाकू से
- प्रयोजन वाचक — राम के लिए आदि।

इसी प्रकार ऐच्छिक वाक्यांशों के अन्य कई प्रकार हैं, जो सामान्य वाक्य संरचना में अतिरिक्त अर्थ के लिए जोड़े जाते हैं। एक वाक्य में दोनों प्रकार के वाक्य आते हैं और पूर्ण अर्थ देते हैं।

वाक्य क्रम

हर वाक्य का एक सहज क्रम होता है। ऊपर छह वाक्य प्रकारों की हमने चर्चा की है। उनका सामान्य क्रम यही है। जहाँ तक ऐच्छिक वाक्यांशों का प्रश्न है— हिंदी में इस संदर्भ में कुछ स्वतंत्रता है। क्रिया से पूर्व इन वाक्यांशों को हम बदले हुए क्रम में रख सकते हैं। उदाहरण के लिए :

1) कल शाम को मैंने एक फिल्म देखी।

2) मैंने कल शाम को एक फिल्म देखी।

3) मैंने एक फिल्म कल शाम को देखी।

इस तरह हम देखते हैं कि सामान्य रूप से अनिवार्य घटकों का एक क्रम होता है और ऐच्छिक घटक इनके साथ अधिक स्वतंत्र क्रम में आते हैं।

एक वाक्यांश में एक या अधिक शब्द होते हैं। कुछ शब्द निश्चित वाक्यांश प्रकार के साथ ही आ सकते हैं। जैसे ने कर्त्ता के साथ (कर्त्ता ने) ही आएगा। और **क्रिया** में सहायक क्रिया 'है?' आदि आएंगे। एक वाक्यांश के भीतर भी शब्दों का विस्तार संभव है। **लड़के को** कर्म वाक्यांश है, अर्थात् इसमें ये दोनों शब्द अनिवार्य हैं। इसके साथ कई अतिरिक्त शब्द जोड़े जा सकते हैं, जिससे वाक्यांश का विस्तार हो। इसी वाक्यांश का विस्तार होगा— **मेरे छोटे लड़के को,** आदि।

वाक्यांश का एक और प्रकार्य है। वाक्यांश कुछ और व्याकरणिक सूचनाएँ देते हैं, उदाहरण के लिए— क्रिया वाक्यांश में कर्ता के लिंग, वचन आदि की सूचना होती है और क्रिया व्यापार के संदर्भ में उसके बल, अर्थ (mood) आदि की सूचना भी होती है।

बोध प्रश्न 1

नीचे दिये गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

1) लिखित भाषा और मौखिक भाषा में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

2) लिखित और मौखिक में से भाषा का कौन-सा रूप प्राचीन है ?

.....

.....

.....

3) वाक्य और वाक्यांश में क्या अंतर है ?

.....

.....

.....

अभ्यास– 1

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। इनमें ऐच्छिक वाक्यांशों को रेखांकित करें और सामने दी गई खाली जगह में इन के प्रकार लिखें कि ये कौन-से ऐच्छिक वाक्यांश के प्रकार हैं।

1) दीवार पर एक तस्वीर टंगी हुई है। ( )

2) शाम को हम सब बाजार जाते हैं। ( )

3) गाड़ी ठीक आठ बजे छूटती है। ( )

4) उसने चाकू से डिब्बा खोला। ( )

5) यह पैन मैंने राम के लिए लिया है। ( )

अभ्यास– 2

अगले पृष्ठ पर दिए गए वाक्यों में अनिवार्य वाक्यांशों को रेखांकित करते हुए बताएँ कि ये कौन से वाक्य प्रकार हैं।

उदाहरण :	**मैने**	**राम को**	**पैसे**	**दिए**	(द्विकर्मक वाक्य)
	कर्ता	प्राप्तकर्ता	कर्म	क्रिया	

1) मैदान में गाय घास चर रही है। ( )

2) बच्चे पैदल स्कूल गये। ( )

3) उसने अपने बेटे को टिकट के लिए पाँच रुपये दिये। ( )

4) उसे चार दिन से मलेरिया है। ( )

5) बच्चा दूध पीकर सोया। ( )

20.2.2 वाक्य में पदक्रम

ऊपर की चर्चा में हमने वाक्य में सामान्य पदक्रम का उल्लेख किया है। बोलचाल की भाषा में इस पदक्रम में आवश्यकता के अनुकूल परिवर्तन भी किया जाता है।

उदाहरण : सामान्य पदक्रम : आप बाकी पैसे लीजिए

परिवर्तित पदक्रम : लीजिए बाकी पैसे आप

इस परिवर्तन का क्या कारण है? हम परिवर्तित पदक्रम में क्रिया को आगे क्यों ले आए हैं? इस का कारण यही है कि वार्तालाप में हम न केवल सूचनाएँ देते हैं बल्कि महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रमुखता देते हैं। प्रमुखता देने के लिए आमतौर पर क्रिया को वाक्य के शुरू में ले आते हैं। अर्थात् यहाँ हम क्रिया को प्रमुखता देते हैं। इस प्रक्रिया को 'अग्रप्रस्तुति' कहा जाता है। उदाहरण के लिए :

यदि आप मकान तलाश कर रहे हैं और बहुत कोशिशों के बाद आप को मकान मिला है तो आप घर आ कर कहते हैं ..... **'मिल गया मकान।'**

यहाँ मिलने की बात पर बल है। मकान का मिलना नयी सूचना है जबकि मकान (शब्द) पहले से परिचित सूचना है। इस तरह नयी सूचना को आगे प्रस्तुत करना 'अग्रप्रस्तुति' है।

सामान्य बोलचाल में व्यक्ति सामान्य वाक्य क्रम में अक्सर पूरा वाक्य नहीं बोलता। कभी-कभी उत्तर में सिर्फ एक ही शब्द से काम चला लिया जाता है।

उदाहरण के लिए :

क) आप ने उन्हें कितने रुपये दिये थे ?

ख) चार

यहाँ सिर्फ उस एक शब्द का उच्चारण है, जो वास्तव में अपेक्षित नई सूचना है। इसी प्रकार व्यक्ति कभी-कभी अपनी ओर से वाक्य को अधूरा छोड़ देता है या कुछ बातें श्रोता के समझने हेतु छोड़ देता है। जैसे -

'तुम मेरे पैसे कल शाम तक लौटा देना नहीं तो .....'

'हम जा तो सकते थे लेकिन .....'

कभी-कभी श्रोता वक्ता को वाक्य के आधे ही में रोक देता है और वह अपनी ओर से उसके कथन को पूरा कर देता है। इस के दो कारण हो सकते हैं। वह या तो वक्ता के कथन को समझ चुका है और वक्ता के अनुसार ही वाक्य को पूरा करता है, या कभी श्रोता वक्ता को वाक्य पूरा करने का अवसर दिए बिना उससे भिन्न कथन को अपनी ओर से जोड़ देता है,

उदाहरण के लिए :

क) 'यदि वे लोग दस मिनट के भीतर न आए.....'

ख) 'तो हम लोग चल देंगे यही कहना चाह रहे थे ना'

20.2.3 अनुतान

आपने आधार पाठ्यक्रम की इकाई 2 में अनुतान या लहजे के बारे में जानकारी प्राप्त की है। अतः आप जानते हैं कि अनुतान से तात्पर्य 'बोलने के ढंग' से है। एक ही वाक्य को विभिन्न अनुतानों से बोला जाता है तो उसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है। उदाहरण के लिए:

वह चला गया। (सामान्य सूचक)

वह चला गया? (प्रश्न)

वह चला गया! (विस्मय)

इस एक ही वाक्य में तीन चिह्न (खड़ी पाई (पूर्ण विराम), प्रश्न चिह्न तथा विस्मयादि बोधक चिह्न) तीन अनुतानों का बोध कराते हैं। विस्मयादि बोधक चिह्न से न केवल विस्मय बल्कि आश्चर्य, प्रशंसा, व्यंग्य आदि अर्थ भी प्रकट हो सकते हैं।

अनुतान का भाषा में महत्व

अनुतान से हम सामान्य बोलचाल में अपने विविध मनोभावों को कुशलतापूर्वक प्रकट करते हैं। वास्तव में हम सूचना देने का कार्य बहुत कम करते हैं। सामान्य बोलचाल में हम सूचनाओं के संदर्भ में अपने विभिन्न मनोभावों को प्रकट करते हैं। ये मनोभाव दूसरे व्यक्ति के कथन के संदर्भ में और सार्थक हो जाते हैं। यानी दूसरे व्यक्ति के कथन के संदर्भ में आप नाराज होते हैं या सहमत होने का नाटक करते हैं। इसी प्रकार एक वक्तव्य में व्यक्ति फुसलाना, धमकी देना, क्षमा मांगना, चापलूसी करना, अपनी दीनता प्रकट करना या अपना अधिकार जताना आदि कई अर्थ पक्षों को ले कर चलता है। ये सारे अर्थ अनुतान से प्रकट होते हैं। लेकिन एक ही वाक्य से इतने सारे मनोभाव कैसे प्रकट हो सकते हैं। सूचना और प्रश्न के अतिरिक्त हमारे पास सिर्फ एक अनुतान है और वह इन सारे भावों को एक साथ कैसे लेकर चलता है ? इसकी जानकारी आप के लिए रोचक और उपयोगी होगी।

मनोभावों को प्रकट करने के लिए हम अनुतान के साथ-साथ आवाज ऊँची करना, शब्दों पर बल देना (जिसे व्याकरण में बलाघात कहते हैं) और चेहरे के भावों तथा अन्य आँगिक चेष्टाओं से भी काम लेते हैं। जब हम गुस्से से बात करते हैं तो आवाज तेज करते हैं और जब दीनता से बात करते हैं या कुछ माँगते हैं तो आवाज धीमी करते हैं। यदि गाली देते हैं तो गाली के शब्द पर जोर होता है और ऊँची आवाज में बोलते हैं। लेकिन जब किसी मित्र को परिहास में गाली देते हैं तो उच्चारण लम्बा करते हैं और अनुतान थोड़ा-सा ऊपर करते हैं। इन समस्त सहयोगी गुणों, कार्य-कलापों से हम अपने बहुत से मनोभावों को प्रकट करते हैं। श्रोता भी इन गुणों को पहचानता है और इसी के अनुरूप वह वार्तालाप को आगे बढ़ाता है। वह भी इन मनोभावों पर अक्सर टिप्पणी करता है। उदाहरण के लिए :

श्रोता :'तेवर क्यों दिखा रहे हो ? आवाज ऊँची करने की जरूरत नहीं। मैं तुमसे नहीं डरता।'

इस कथन में श्रोता दूसरे आदमी के क्रोध को पहचानता है, लेकिन अपना अधिकार जताने की कोशिश करता है। ऐसे कथन वार्तालाप के वास्तविक संदर्भ को पहचानने में पाठक की सहायता भी करते हैं।

20.2.4 सम्प्रेषण का उद्देश्य

सामान्य बातचीत में दूसरे व्यक्ति के कथन में दिए हुए उद्देश्य को भी हम पहचानते हैं और

'जब माँ बच्चे से कहती है कि सूरज ढल गया है तो इसका तात्पर्य यह है कि बच्चों को पढ़ने के लिए बैठना चाहिए।'

इस आशय को समझने वाले व्यक्ति उसी के अनुसार कार्य करते हैं या प्रति-वक्तव्य करते हैं। संदर्भ को न समझने वाला व्यक्ति इस वार्तालाप के अर्थ को नहीं समझेगा।

इसी प्रकार किसी वक्तव्य का प्रतिवक्तव्य भी छिपा हुआ अर्थ लिए होता है। आगे एक प्रश्न और उसके संभावित उत्तर में छिपे हुए अर्थ को पहचानिए -

क) अरे सारी मिठाई कहाँ चली गई ?

ख) अभी गोपाल कमरे में गया था। (अर्थात् उसने सारी मिठाई खा ली होगी)

ग) हाँ, मैंने ही खा ली है। (अर्थात् मुझ पर बेकार संदेह किया जा रहा है)

20.2.5 वाक्य से ऊपर का स्तर

व्याकरण में आमतौर पर सिर्फ वाक्य की संरचना तक का ही विश्लेषण किया जाता है। लेकिन भाषा वास्तव में अकेले वाक्यों तक सीमित नहीं है। हम अपने विचारों को किसी क्रम में कई वाक्यों द्वारा प्रकट करते हैं। इन वाक्यों का एक दूसरे से संबंध होता है, जिसे अक्सर हम इसलिए, लेकिन, हालाँकि आदि संयोजकों द्वारा जोड़ते हैं। यदि ये संयोजक सही न हों तो कुल मिला कर सही तात्पर्य समझ में नहीं आ सकता।

उदाहरण के लिए :

'पानी बरस रहा था, चूँकि मैं बाहर नहीं जा सकता था।'

इस कथन में संयोजक 'चूँकि' से दो बातों को जोड़ा गया है। लेकिन कुल मिलाकर कोई अर्थ नहीं निकलता, क्योंकि संयोजक का इस्तेमाल सही ढंग से नहीं किया गया। इस वाक्य का सही रूप हो सकता है -

'चूँकि पानी बरस रहा था, मैं बाहर नहीं जा सकता था।'

इस प्रकार वाक्य के स्तर से ऊपर एक विस्तृत पाठ को 'प्रोक्ति' कहा जाता है, जिसका विश्लेषण हम पूरे पाठ के संदर्भ में कर सकते हैं। सामान्य रूप से वार्तालाप में भी एक दूसरे के कथन के संबंध को हम प्रोक्ति के संदर्भ में देख सकते हैं।

प्रोक्ति शब्द आप को कठिन लग सकता है लेकिन समझने में यह इतना कठिन नहीं है। इसे आप यूँ समझ सकते हैं कि यदि रेडियो पर एक निबंध लिखा गया हो तो उस पूरे निबंध का पाठ या वस्तु प्रोक्ति है। इस निबंध में सारी बातें रेडियो के कार्य, उपयोग आदि के इर्द-गिर्द ही होंगी। इसी तरह से एक कविता या कहानी या उपन्यास कुल मिलाकर एक प्रोक्ति (discourse) है। ऐसे पाठ की संरचना के विश्लेषण में हम वाक्यों में क्रमबद्धता, संयोजन आदि बातों को देख सकते हैं। प्रोक्ति को इन कुछ विशेषताओं के संदर्भ में समझा जा सकता है।

बोध प्रश्न– 2

नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

1) बोलचाल की भाषा में वाक्य के सामान्य पदक्रम में क्या परिवर्तन होता है? इस परिवर्तन का कारण क्या है?

.....

.....

.....

2) अनुतान से आप क्या समझते हैं? अनुतान बदलने से वाक्य में क्या परिवर्तन होता है?

.....

.....

.....

.....

3) वार्तालाप करते हुए अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए हम भाषा में अनुतान के अलावा और किन-किन क्रियाओं का इस्तेमाल करते हैं?

.....

.....

.....

.....

4) प्रोक्ति किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

विराम चिह्न

किसी भी भाषा के पूर्ण ज्ञान एवं सही प्रयोग के लिए विराम चिह्नों का अत्यधिक महत्व है। बिना विराम चिह्नों के भाषा को समझना कठिन होता है। यहाँ हम कुछ महत्वपूर्ण विराम चिह्नों की चर्चा करेंगे।

क) **अल्पविराम (Comma)** : अल्पविराम का अर्थ है थोड़ी देर के लिए विराम। अल्पविराम को कोमा (,) लगा कर बताया जाता है। अल्पविराम का प्रयोग निम्नलिखित अवस्थाओं में होता है :

1) जब एक ही शब्द भेद के तीन या उससे अधिक शब्दों का वाक्य में एक साथ प्रयोग हो। जैसे- 'राम, मोहन, सोहन और हरीश दिल्ली गए।'

2) जब अनेक शब्दयुग्मों का वाक्य में प्रयोग हो तो अंतिम को छोड़ कर के पूर्व तक के शब्दयुग्मों के बाद जैसे - 'हानि-लाभ, सुख-दुख, हार-जीत ये सभी जीवन के साथी हैं।'

3) इसी प्रकार संबोधन के बाद जैसे - 'राम, जरा इधर आना।'

4) किसी भी उक्ति के बाद 'कि' के स्थान पर, जैसे - 'गुरुजी ने कहा, खूब मेहनत करो।'

5) यदि वाक्य के बीच में पदांश या वाक्यखंड आ जाए तो उसके दोनों छोर पर अल्पविराम का प्रयोग होता है जैसे - 'चिंता, चाहे जिस प्रकार की हो, मनुष्य को भस्म कर देती है।'

इसके अतिरिक्त भी जब उद्देश्य बहुत लम्बा हो तो, दो वाक्यखंडों के बीच 'और' का लोप होने जैसी स्थितियों में अल्पविराम का प्रयोग होता है।

ख) **अर्धविराम (Semi Colon)** : अल्पविराम की अपेक्षा जहाँ अधिक ठहराव अपेक्षित हो, वहाँ अर्द्धविराम (;) का प्रयोग होता है। जैसे :

'पदार्थ का स्तर किस प्रकार ऊँचा हो; छात्र अध्ययन में किस प्रकार तल्लीनतापूर्वक प्रवृत्त हों, उनमें नैतिकता का विकास कैसे हो, परीक्षा भवन में नकल कैसे बंद हो तथा वे अध्यापक के प्रति भक्तिभाव किस प्रकार प्रकट करें।'

ग) **उपविराम (Colon)** : अर्धविराम की अपेक्षा जहाँ अधिक ठहराव अपेक्षित हो, और साथ ही वाक्य जैसी समाप्ति अपेक्षित न हो वहाँ उपविराम (:) का प्रयोग होता है। पुस्तक, निबंध आदि के शीर्षक में उपविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे - प्रसाद : विचार और विश्लेषण (पुस्तक शीर्षक) भारत आरण्यक का देश : अरण्यहीन (निबंध शीर्षक)।

घ) **पूर्णविराम (Full Stop)** : जहाँ वाक्य या मनोभाव पूरा हो जाए वहाँ पूर्णविराम (।) का प्रयोग होता है। जैसे, राम स्कूल गया। पूर्णविराम के लिए आजकल (.) का प्रयोग भी किया जाने लगा है, जो हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है।

ङ) **प्रश्नवाचक (Interrogation)** : प्रश्नवाचक (?) प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में आता है। जैसे - क्या राम स्कूल गया?

च) **विस्मयादिबोधक (Exclamation)** : आनंद, उत्साह, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को व्यक्त करने के लिए विस्मयादिबोधक (!) का प्रयोग होता है। साथ ही विस्मयादि सूचक शब्दों के बाद भी इसका प्रयोग होता है जैसे - वाह! ओह! अरे!

छ) **संयोजक चिह्न (Hyphen)** : दो विपरीतार्थक शब्दों के बीच (ऊँच-नीच), सहचर शब्दों के बीच (खाना-पीना), प्रतिबिम्बित शब्द और सार्थक शब्द के बीच (अनाप-सनाप), द्वंद्व समास के दोनों भेदों में पदों के बीच (राम-कृष्ण), जब संज्ञा की पुनरुक्ति हो (गाँव-गाँव) आदि स्थितियों में संयोजक चिह्न (-) का प्रयोग होता है।

अभ्यास– 3

यहाँ हम आपको कुछ वाक्य दे रहे हैं, जिनमें से सभी विराम चिह्न हटा लिए गए हैं। आप जहाँ जो विराम चिह्न लगाना हो, लगा कर इन वाक्यों को पूरा करें।

क) रमेशजी क्या हालचाल है

ख) जैसी बारिश इस साल हुई पहले कभी नहीं हुई थी

ग) यहाँ कभी कभी बर्फ भी पड़ जाती है

घ) वाह कितना खूबसूरत फूल है

ङ) सुबह हुई आकाश में सूरज की सुनहली किरणें अठखेलियाँ करने लगी फूलों पर भंवरे मंडराने लगे सारा संसार जीवन की उमंग में थिरकने लगा

च) भारत एक सांस्कृतिक देश

छ) उर्वशी विचार और विश्लेषण

ज) वह तो खाना पीना सोना जागना भी भूल गया

20.3 वार्तालाप (मूल पाठ)

अब हम 'यात्रा की तैयारी' विषय पर एक वार्तालाप प्रस्तुत कर रहे हैं, इसे पढ़ने पर आप देखेंगे कि बातचीत में किस तरह की भाषा का इस्तेमाल होता है और भाषा के लिखित रूप से संवाद की भाषा कैसे भिन्न होती है।

वार्तालाप

(वर्मा परिवार खाने की मेज पर बैठा है। नाश्ता चल रहा है)

श्री वर्मा : सुनो, अगले हफ्ते मेरी पाँच दिन की छुट्टी है। इस बार क्यों न कहीं चला जाए।

श्रीमती वर्मा : वाह! यह तो अच्छी खबर दी आपने। बहुत दिनों से हम लोग कहीं बाहर नहीं जा पाए। मनीष भी कई बार कह चुका है। कुछ दिन की और छुट्टी ले लीजिए। पुरी हो आएंगे। मिसेज (मिस्रा) पिछली बार यहाँ आई थीं तो वहाँ की कई दिनों तक तारीफ ही करती रहीं।

मनीष : क्या कहा, पुरी ? वह भी कोई जगह है। पापा कश्मीर चलिए न! हर बार फिल्म में कश्मीर देखता हूँ तो मन करता है कि एक बार जरूर वहाँ जाना चाहिए।

प्रशांत : पापा, जयपुर चलिए न! सुना है बड़ी ही सुंदर जगह है। मैंने कहीं पढ़ा है कि वहाँ की हर चीज गुलाबी है।

मनीष : क्या जगह चुनी है गर्मियों में जयपुर? मरना है क्या? इन दिनों लोग पहाड़ पर जाते हैं। जब तक झरने, पहाड़, जंगल न हो घूमने का मजा ही क्या? कश्मीर का क्या मुकाबला वह तो स्वर्ग है, स्वर्ग।

प्रतिभा : नहीं पापा! दिल्ली चलिए। मैं पिछली बार स्कूल की ट्रिप में जा नहीं सकी थी। 'अप्पू घर' की तारीफ सुन-सुनकर मैं तो बोर हो गई।

श्रीमती वर्मा : ओ हो! इस में इतनी बहस करने की क्या जरूरत है? मनीस तुम जा कर पर्यटन कार्यालय से पता कर आओ।

मनीष : हाँ माँ। वहाँ हर तरह की जानकारी मिल जाती है। मैं अभी हो आता हूँ।

(मनीष टूरिस्ट ब्यूरो में पर्यटन अधिकारी से मिलता है)

पर्यटन अधिकारी : कहिए।

मनीष : सर! हम चार-पाँच दिनों का शार्ट टूर करना चाहते हैं। आप कोई अच्छा प्लेस, सजेस्ट करें।

प.अ. : देखिए, यों तो शिमला, नैनीताल, अल्मोड़ा, दार्जिलिंग ही लोग प्रेफर करते हैं। वैसे आप कहाँ जाना चाहते हैं ?

मनीष : आई एम इंटरेस्टेड इन कश्मीर।

प.अ. : कश्मीर के लिए जम्मू होते हुए आप को जाना होगा। आप वहाँ 'वैष्णो देवी' का टेम्पल भी देख सकते हैं। बट यू शुड हैव एटलीस्ट टेन डेज।

मनीष : ठीक है और कोई सेंटर?

प.अ. : आप जयपुर, चंडीगढ़, अजमेर आदि का प्रोग्राम भी बना सकते हैं, हाँ, एक काम करो - ये सारे ब्रोश्योर ले जाओ। हैव ए टाक विद योर फेमिली।

मनीष : यस, इटज ए गुड आइडिया। आप ये सब दे दीजिए।

(मनीष संबंधित सामग्री लेकर घर आता है)

प्रशांत : भैया आ गए। लाओ भैया, मुझे राजस्थान का नक्शा दो। ये रही पिंक

प्रतिभा : रहने दे यह, सब तेरे दोस्त रवि की लगाई हुई आग है। वो दिन-रात पिंक सिटी का गाना जो गाता रहता है। पापा दिल्ली ही चलिए मुझे शापिंग भी करनी है वहाँ।

मनीष : आप दोनों अपनी चोंच थोड़ी देर बंद ही रखें तो बेहतर होगा। चलो पापा लेट अस डिसाइड इट नाऊ।

श्रीमती वर्मा : सुनिए, मनीस का रिजल्ट तो अभी तक नहीं आया। मिसेज तलवार कह रही थी अगले हफ्ते ही आएगा।

श्री वर्मा : हाँ भई, यह बात तो हम लोग भूल ही गए। अगर मनीष का रिजल्ट हफ्ते भर में निकलने वाला है तो ऐसे में उसका मन भी नहीं लगेगा घूमने में। एडमिशन वैसे भी लेट हो गया है, इस बार।

श्रीमती वर्मा : वही तो हम कहे थे (हमने कहा था) आप को कुछ भी तो याद नहीं रहता। एडमिसन में बाद में परेशानी होगी। और तो और जबलपुर वाले मामाजी भी तो अगले हफ्ते ही आने को कहे थे।

प्रतिभा : कहीं जाने की बात हो तो कोई न कोई रिश्तेदार जरूर आ टपकता है।

प्रशांत : पापा! कोई बहाना नहीं चलेगा। लेट अस गौ टू डेल्ही। मुझे अच्छा-सा बैट भी तो खरीदना है।

मनीष : व्हाट ए प्लेस। तब आगरा ही क्या बुरा है। घूमने के लिए दिल्ली जाने की बात कभी किसी ने सुनी है ? सो बोर।

श्रीमती वर्मा : वैसे हम मनीस जब छोटा था तभी गए थे। पर आप यदि आफिस के काम में उलझ गए तो पिछली बार की तरह मुझे रसोई की सड़ी गर्मी ही झेलनी पड़ेगी। ऐसे में हमें कहीं नहीं जाना।

श्री वर्मा : इस बार हम लोग किसी होटल में ठहरेंगे। कम्पलीट होलिडे। नो निश्तेदार ना आफिस। अब तो ठीक है।

मनीष : पापा, चलिए न। हम लोग ताज के टिकट बुक कर आएँ।

टी.सी.आई.में सब हो जाता है।

श्री वर्मा : हाँ यह भी ठीक है। चलो टी.सी.आई.से ही 'अशोक यात्री निवास' की बुकिंग भी हो जाएगी। क्यों श्रीमती जी। अब तो खुश हैं ना?

प्रशांत : अवर पापा इज ग्रेट।

श्री वर्मा : मनीष! मेरे दिल्ली वाले आफिस का नम्बर नोट कर लेना।

मनीष : जी पापा।

20.4 वार्तालाप पर चर्चा

अभी आपने ऊपर लिखित वार्तालाप पढ़ा। अब हम इस वार्तालाप का विश्लेषण करेंगे। आप देखेंगे कि इस वार्तालाप में कहीं पर अंग्रेजी के शब्दों या वाक्यों का बीच-बीच में खुला प्रयोग किया गया है (कोडमिक्सिंग), कहीं पर शब्दों का उच्चारण बदला हुआ है, कहीं बातों में अनुतान एवं बलाघात का प्रयोग किया गया है। इन सारी बातों को हम अलग-अलग शीर्षकों में रख कर देखने का प्रयास करेंगे।

अनुतान : हम अपने विभिन्न मनोभावों को प्रकट करने के लिए वार्तालाप में अनुतान का प्रयोग करते हैं। इस वार्तालाप के निम्नलिखित कथनों को देखें :

1) 'वाह। यह तो अच्छी खबर दी आपने।' (आश्चर्य)

2) 'क्या कहा, पुरी ? वह भी कोई जगह है।' (असहमति)

3) 'पापा, जयपुर चलिए, न।' (अनुरोध)

4) 'क्या जगह चुनी है, गर्मियों में जयपुर। मरना है क्या ?' (असहमति)

5) ओ हो! इसमें इतनी बहस करने की क्या जरूरत है ? (खीज)

अब आप देंखें कि कैसे इन वाक्यों में लहजे या अनुतान के द्वारा विभिन्न मनोभावों को प्रकट किया गया है। पहले वाक्य में आश्चर्य के साथ-साथ प्रसन्नता भी व्यक्त हो रही है। इसे अगर ऐसे कहा जाता कि 'यह अच्छी खबर दी आपने' तो लहजा बदलने के साथ ही इस वाक्य का आशय भी बदल जाता। कभी-कभी अनुतान बदलने के साथ वाक्य के पदक्रम में भी परिवर्तन हो जाता है। अर्थात् कुछ शब्द वाक्य से छूट जाते हैं या जुड़ जाते हैं। अन्य वाक्यों को भी देखें कि अनुतान द्वारा उनमें किस प्रकार आश्चर्य, असहमति, अनुरोध एवं खीज जैसे मनोभावों को प्रकट किया गया है। अतः बोलने के ढंग में उतार-चढ़ाव से, शब्दों को ऊँचा या धीमा बोल कर हम वार्तालाप में अपने मनोभावों को प्रकट करते हैं।

बलाघात : वार्तालाप में बलाघात का भी बहुत महत्व है। बातचीत करते हुए हम शब्द या वाक्य में हर जगह बल नहीं देते। कुछ विशेष शब्दों पर ही बल देते हैं। इस का कारण क्या है? हम जिन शब्दों पर बल देते हैं, उन के द्वारा हम नई सूचना दे रहे होते हैं। उदाहरण के लिए इस वार्तालाप के ये संवाद देखिए।

प्रशांत : पापा, **जयपुर** चलिए ना। सुना है बड़ी ही सुंदर जगह है। मैंने कहीं पढ़ा है कि वहाँ की हर चीज गुलाबी है।

मनीष : कैसी जगह चुनी है, **गर्मियों** में जयपुर? मरना है क्या? इन दिनों लोग **पहाड़** पर जाते हैं।

इन संवादों को बोलते हुए जयपुर, गर्मियों तथा पहाड़, इन शब्दों पर बल दिया गया है। क्योंकि ये तीनों शब्द नई सूचना देते हैं।

इस प्रकार वार्तालाप में नई सूचना देने के लिए भी या कभी-कभी किसी विशेष बात को महत्व देने के लिए भी शब्दों और वाक्यों पर बल दिया जाता है।

अभ्यास– 4

निम्नलिखित वाक्यों में अनुतान से कौन से मनोभाव प्रकट हो रहे हैं ?

1) छोड़ो न, वह अपने आप चला जाएगा। ( )

2) वाह! क्या बात कही आपने। ( )

3) मम्मी, बाजार चलो न। ( )

4) तुम सारी मिठाई खा गए! ( )

5) तुम सारी मिठाई खा गए। ( )

6) तुम सारी मिठाई खा गए? ( )

अभ्यास– 5

नीचे कुछ मनोभाव दिए गए हैं। इन मनोभावों को प्रकट करने वाले वाक्य बनाइए। एक मनोभाव के लिए एक वाक्य बनाइए। उत्तर लिखने से पूर्व अभ्यास - 4 को ध्यानपूर्वक पढ़ लें। इससे आप को उत्तर लिखने में सुविधा होगी।

1) (आश्चर्य) .....

2) (आश्चर्य एवं प्रसन्नता) .....

3) (क्रोध) .....

4) (सामान्य सूचना) .....

5) (प्रश्न) .....

6) (अनुरोध) .....

कोडमिक्सिंग : आपने मूल पाठ के रूप में दिए गए वार्तालाप को पढ़ते हुए देखा होगा कि बीच-बीच में अंग्रेजी के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया गया है। जब भाषा में बातचीत करते हुए बीच-बीच में दूसरी भाषा के शब्दों/वाक्यों का प्रयोग हो तो इसे 'कोडमिक्सिंग' कहा जाता है। बोलने वाला या वक्ता अपनी इस प्रवृत्ति के प्रति जागरूक नहीं होता। ऐसा वह जानबूझकर नहीं कर रहा होता। तो इस कोडमिक्सिंग का कारण क्या है? और क्या एक वक्ता हर किसी से बात करते हुए कोडमिक्सिंग करता है? इसका पहला और प्रमुख कारण तो संप्रेषण अर्थात् अपनी बात को दूसरे तक पहुँचाना ही है। इसके बारे में कोई नियम नहीं बनाया जा सकता या यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि कोडमिक्सिंग के और क्या कारण हैं। क्योंकि एक ही वक्ता विभिन्न लोगों से बातचीत करते हुए हमेशा कोडमिक्सिंग नहीं करता। फिर भी कुछ लोगों में यह प्रवृत्ति होती भी है।

हमारा संबंध यहाँ मूल पाठ में हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों के किए गए प्रयोग से है। पढ़ा लिखा प्रत्येक हिंदी भाषी अपने वार्तालाप में अंग्रेजी के शब्दों, वाक्यों का कमोबेश प्रयोग करता है। इस के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं।

1) हिंदी भाषा में अनेक अंग्रेजी शब्दों का हूबहू प्रचलन और स्वीकार। जैसे रेल, स्टेशन, पेन, गिलास, गुड मार्निंग, गुड इवनिंग, हैलो, टी.वी. आदि।

2) अंग्रेजी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी एक संपर्क भाषा के रूप में उपलब्ध होना। आप देखेंगे कि भारत में दक्षिण भारतीय भाषाएँ उत्तर भारत की भाषाओं से कितनी भिन्न हैं। अतः दक्षिण भारतीय के साथ बात करने के लिए या तो आपको उसकी भाषा आनी चाहिए या उसे आप की। यह हर स्थिति में संभव नहीं होता। किंतु अंग्रेजी भाषा में आप बातचीत कर सकते हैं।

3) अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा।

फिर भी कोडमिक्सिंग वार्तालाप में होनी चाहिए या नहीं इस बारे में कोई निर्णय नहीं दिया जा सकता। लेकिन हमारी राय है कि यदि किसी एक भाषा में संवाद या वार्तालाप बोलना या लिखना सीखना हो तो निश्चित रूप से जहाँ तक हो सके कोडमिक्सिंग नहीं करनी चाहिए। दिए गए पाठ के इन वाक्यों को देखें।

- मैं पिछली बार **स्कूल** की **ट्रिप** में जा नहीं सकी थी।
- **सर**! हम चार पाँच दिनों का **शार्ट टूर** करना चाहते हैं।
- आप कोई अच्छा **प्लेस सजेस्ट** करें।
- **आइ एम इंटरेस्टेड इन कश्मीर।**

- आप वहाँ वैष्णों देवी का **टेम्पेल** भी देख सकते हैं।
- **बट यू शुड हैव एटलीस्ट टेन डेज़।**
- ये सारे **ब्रोश्योर** ले जाओ।
- **हैव ए टाक विद योर फैमिली।**
- **यस इटज़ ए गुड आइडिया।**
- ये रही **पिंक सिटी** जयपुर।
- मुझे **शापिंग** भी करनी है वहाँ।
- चलो पापा **लेट अस डिसाइड इट नाउ।**
- मनीष का **रिजल्ट** तो अभी तक नहीं आया।

इन वाक्यों में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का और पूरे वाक्यों का भी प्रयोग किया गया है। आप इन वाक्यों में प्रयुक्त उन अंग्रेजी शब्दों को छाँट कर अलग कर सकते हैं, जिन की जगह हिंदी के शब्द बड़ी आसानी से प्रयुक्त हो सकते थे। हम ऐसे शब्दों को नहीं चुनेंगे जो हैं तो अंग्रेजी भाषा के ही किंतु जो अब बोलचाल की हिंदी भाषा में पूरी तरह खप गए हैं।

अभ्यास– 6

मान लीजिए क, ख, ग आपके मित्र हैं, जिन के साथ आप दशहरे का मेला देखने जा रहे हैं। इस विषय पर आप मित्रों के बीच जो संवाद होता है, उसे हम यहाँ लिख रहे हैं। लेकिन बीच-बीच में कुछ संवाद छोड़ दिए गए हैं। जिन्हें आपको लिखना है।

क) चलो भाई! चलना नहीं है क्या ?

ख) .....

क) दशहरे का मेला देखने। और किधर।

ग) .....

क) अच्छा। तो तुम यहीं पर हो।

ग) .....

ख) हाँ यह तो मुझ से किताब लेने आया था।

क) किताब-विताब छोड़ो और तुम भी साथ चलो।

ग) .....

ख) अरे चलो यार-सब रहेंगे तो मजा आएगा।

ग) लेकिन .....

क) तुम इसी बात से चिंतित हो ना कि घर पर सूचना कैसे दें।

ख) ऐसा करते हैं ..... तुम्हारे घर से होकर चलते हैं ..... वहाँ बताते हुए चलेंगे।

ग) .....

क) अब क्यों नहीं चल सकोगे।

ग) .....

ख) पैसे-वैसे छोड़ो। मेरे पास हैं।

क) .....

ख) पचासेक रुपये

क) ठीक है। आओ चलें।

प्रांतीय विशेषताएँ

आप यह तो जानते ही हैं कि हिंदी भाषा सभी प्रांतों में नहीं बोली जाती। हर प्रांत की अपनी अलग भाषा या बोली है। हिंदी भाषा के भी कई रूप हैं। समस्त उत्तर प्रदेश की भाषा होते हुए भी बनारस और लखनऊ की बोलचाल की हिंदी में आप बहुत अंतर पाएँगे। यह अंतर दो प्रकार का होगा। एक तो लहजे का और दूसरा प्रांतीय शब्दों का। बनारस का व्यक्ति जब हिंदी बोलेगा तो बनारस क्षेत्र के शब्द एवं लहजे का प्रयोग करेगा और दूसरी ओर जब एक दक्षिण प्रांत का रहने वाला व्यक्ति हिंदी में बोलेगा तो उसकी हिंदी में लिंग, वचन की गड़बड़ी झलकेगी। हिंदी में वार्तालाप करते समय मानक हिंदी के उच्चारण को अपनाने का पूरा प्रयास करना चाहिए। मूल पाठ को आप ने पढ़ा है। आप ने देखा होगा कि इसमें श्रीमती वर्मा की भाषा पर प्रांतीय प्रभाव झलकता है। इसलिए वह मनीष को मनीस, मिश्रा को मिस्रा और खबर को खवर बोलती हैं।

हिंदी शैली/उर्दू शैली

हिंदी लिखते या बोलते समय कुछ लोग संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का अधिक इस्तेमाल करते हैं और कुछ लोग अरबी-फारसी, तुर्की के शब्दों का अधिक इस्तेमाल करते हैं। सुविधा के लिए इसे हिंदी शैली (संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग) और उर्दू शैली (अरबी-फारसी, तुर्की के शब्दों का अधिक प्रयोग) भी कह दिया जाता है। जहाँ तक हिंदी भाषा में बातचीत करने का सवाल है ये दोनों शैलियाँ सही हैं। वैसे आमतौर पर बातचीत में इन दोनों का मिला-जुला रूप ही देखने को मिलता है। इसलिए उर्दू के ऐसे शब्दों से परहेज नहीं करना चाहिए जो सामान्य रूप से स्वीकृत एवं प्रचलित हों। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित शब्दों को देखें, जिन में दोनों रूप सही एवं सर्वमान्य हैं।

उर्दू	हिंदी	उर्दू	हिंदी
ज़रूरत	आवश्यकता	मज़बूरी	विवशता
दाख़िला	प्रवेश	ख्वाब	स्वप्न
कोशिश	प्रयास	ज़िन्दगी	जीवन
लफ़्ज	शब्द	गुफ़्तगु	बातचीत
एहसास	महसूस	सही	ठीक
दिमाग	मस्तिष्क		

जो मूल पाठ आपने पढ़ा है उसकी शैली देखिए-कौन-सी शैली है। आप पाएंगे कि स्पष्ट रूप से वह न तो उर्दू शैली है और न हिंदी शैली। इसमें दोनों का मिला-जुला रूप है।

अभ्यास– 7

नीचे कुछ उर्दू शैली में संवाद दिए जा रहे हैं। आप को इन संवादों को हिंदी शैली में बदल कर लिखना है।

क) आप के मिज़ाज कैसे हैं?

ख) आपकी इनायत है।

क) अर्सा हो गया आप से मुलाकात नहीं हुई!

ख) दरअसल मैं शहर में नहीं था।

क) आप कहाँ तशरीफ ले गये थे।

ख) मैं तिज़ारत (व्यापार) के सिलसिले में कलकत्ता गया था।

क) कुछ नफ़ा हुआ।

ख) हाँ वहाँ कीमतें काफ़ी बेहतर थीं, मुनाफ़ा ही रहा।

20.5 सारांश

संपूर्ण इकाई पढ़ने के बाद आप समझ गए होंगे कि वार्तालाप या संवाद भाषा का वह मौखिक रूप है जो लिखित भाषा से भिन्न होता है। लिखित भाषा व्याकरण का अनुकरण करती हुई चलती है किंतु मौखिक भाषा में व्याकरण लचीला होता है। वार्तालाप या संवाद करते हुए कोडमिक्सिंग करना, भाषा में प्रांतीय शब्दों का आ जाना, टूटे हुए वाक्य बोलना, किसी के मुँह की बात छीन लेना आदि मौखिक भाषा की विशेषताएँ हैं। वार्तालाप करते हुए हम पूर्ण रूप से भाषा पर निर्भर नहीं होते अर्थात् हम अपनी सारी बात सिर्फ भाषा के माध्यम से ही सम्प्रेषित नहीं करते अपितु कई भाषेतर तत्व हमारे सम्प्रेषण का भाग बनते हैं। जैसे, आंगिक क्रियाएँ, संदर्भ प्रसंग, प्रतीक आदि।

आशा है अब आप हिंदी में संवाद लिखने का सफल प्रयास कर पाएंगे।

20.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

तिवारी भोलानाथ, **अच्छी हिंदी : कैसे बोले कैसे लिखें,** दिल्ली : लिपि प्रकाशन, 1988

जगन्नाथन, वी.रा., **प्रयोग और प्रयोग,** दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1981

20.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) लिखित भाषा एक व्यवस्थित एवं व्याकरणिक भाषा होती है। उसका हर एक के लिए एक निश्चित अर्थ होता है, जो उस भाषा में निहित रहता है। किंतु मौखिक भाषा व्याकरण की दृष्टि से लचीली भाषा होती है। इसमें टूटे हुए वाक्यों का इस्तेमाल होता है, कोडमिक्सिंग होती है, प्रांतीय भाषाओं के शब्द आते हैं तथा अपनी बात करने के लिए भाषेतर तत्वों का इस्तेमाल भी किया जाता है।

2) मौखिक रूप

3) वाक्य सार्थक शब्दों के ऐसे समूह को कहा जाता है, जिससे स्पष्ट रूप से कोई आशय प्रकट हो। और वाक्यांश बिना क्रिया के दो या दो से अधिक पदों के समूह को कहा जाता है।

बोध प्रश्न– 2

1) बोलचाल की भाषा में वाक्य के सामान्य पदक्रम में प्रायः क्रिया का परिवर्तन होता है। वाक्य के पदक्रम में क्रिया आगे आ जाती है। इस परिवर्तन का कारण महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रमुखता देना होता है।

2) 'बोलने के ढंग' या 'लहजे' को अनुतान कहते हैं। अनुतान बदलने से वाक्य में कोई परिवर्तन नहीं होता लेकिन उसके अर्थ एवं आशय में परिवर्तन हो जाता है।

3) वार्तालाप करते हुए अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए हम अनुतान के अलावा आवाज ऊँची करना, शब्दों पर बल देना, चेहरे के भावों तथा अन्य आंगिक क्रियाओं का इस्तेमाल करते हैं।

4) वाक्य के स्तर से ऊपर के पाठ को प्रोक्ति कहा जाता है।

अभ्यास– 3

क) रमेश जी, क्या हालचाल है?

ख) जैसी बारिश इस साल हुई, पहले कभी नहीं हुई थी।

ग) यहाँ कभी-कभी बर्फ भी पड़ जाती है।

घ) वाह! कितना खूबसूरत फूल है।

ङ) सुबह हुई ; आकाश में सूरज की सुनहली किरणें अठखेलियाँ करने लगी; फूलों पर भंवरे मंडराने लगे; सारा संसार जीवन की उमंग से थिरकने लगा।

च) भारत : एक सांस्कृतिक देश

छ) उर्वशी : विचार और विश्लेषण

ज) वह तो खाना-पीना, सोना-जागना भी भूल गया।

अभ्यास– 4

1. खीज एवं आग्रह
2. आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता
3. आग्रह
4. विस्मय
5. सूचना
6. प्रश्न